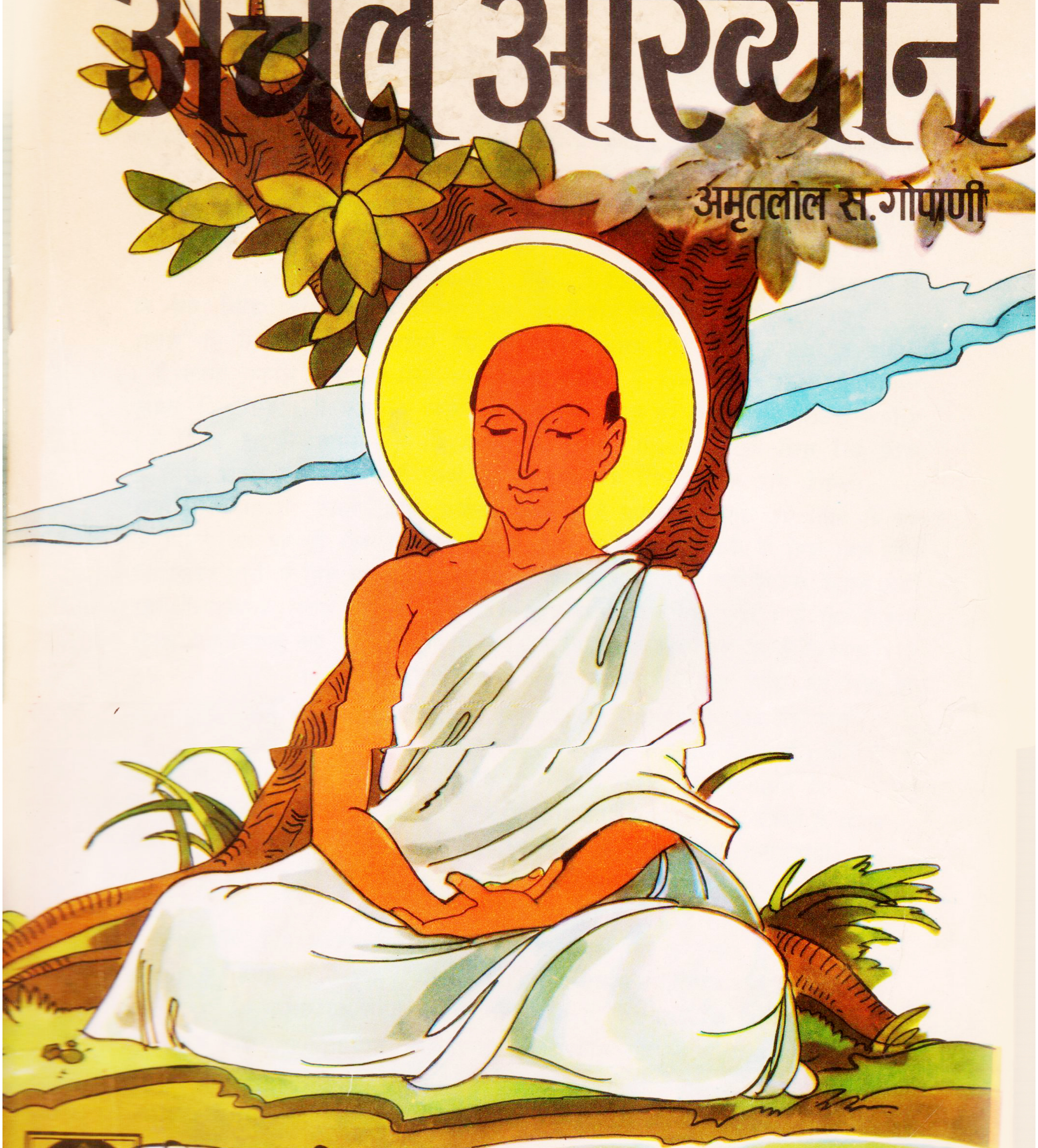
अचल आख्यान

अमृतलाल स. गोपाणी



हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगडों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। 'धर्म' वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की जरूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना जरूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बडे-बडे संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुडी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

अचल आख्यान

अमृतलाल स. गोपाणी

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
अकील दीवानजी
ग्रॉनलुकर प्रेस
१६, सासुन डॉक
कोलाबा, बम्बई–४०० ००१

प्रकाशक :
वाडीलाल डगली
मानद मंत्री
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

एकमात्र विक्रेता

एस० चन्द एन्ड कंपनी लि०
मुख्य कार्यालय : रामनगर, नयी दिल्ली-११००५५
शो रूम : ४/१६-बी, आसफ अली रोड, नयी दिल्ली-११०००२

शाखाएं :

अमीनाबाद पार्क, लखनऊ-२२६००१
२८५/जि, बिपिनबिहारी गांगुली स्ट्रीट, कलकत्ता-७०००१२
सुल्तान बाजार, हैदराबाद-५००००१
३, गांधी सागर ईस्ट, नागपुर-४४०००२
खजांची रोड, पटना-८००००४
माई हीरां गेट, जालन्धर-१४४००८
१५२, अन्ना सलाए, मद्रास-६००००२
ब्लैकी हाउस, १०३/५, वालचन्द हीराचन्द मार्ग, बम्बई-४००००१
के० पी० सी० सी० बिल्डिंग, रेसकोर्स रोड, बंगलोर-५६०००६
६११-७, महात्मा गांधी रोड, एरनाकुलम, कोचीन-६८२०११

अचल आख्यान

सैकड़ों साल पहले भारत में निर्भयपुर नाम का एक बड़ा शहर था। वहां के बहादुर राजा ने सारे शत्रुओं का नाश करके निर्भयपुर को सचमुच निर्भय बना दिया था। लोग घर खुला छोड़कर सो जाते थे। किसी प्रकार का डर नहीं था।

राजा का नाम रामचंद्र था। उसे अपनी जनता की सदा फिक्र रहती थी। जरूरत पड़ने पर प्रजा के हित में वह खजाना भी खोल देता था।

उस राजा की सेना में एक बहुत ही बहादुर सैनिक था। उसका नाम था अचल। अचल केवल बलवान ही नहीं था, उसमें दया और क्षमा के गुण भी थे।

ऐसे सुखी और आबाद शहर में भी न जाने कैसे और कहां से चोरी का उपद्रव शुरू हो गया। रोज रात को किसी-न-किसी घर में चोरी होने लगी।

चोर भी चोरी की कला में इतना उस्ताद था कि उसे कभी किसी ने देखा नहीं। उसके कदमों के या और कोई भी निशान वह कहीं छोड़ता नहीं था। सुबह होने पर ही पता चलता था कि चोरी हुई है। ऐसा गजब का चोर था।

शुरुआत के कुछ दिनों तक तो लोग मन मसोसकर बैठे रहे। फिर चोर को खोज निकालने की भरसक कोशिश उन्होंने की। बड़े-बड़े अधिकारियों ने भी

कोशिशें कीं मगर सब बेकार! सारे शहर में चोरी का आतंक फैल गया।

शहर में लोगों ने जमा होकर तय किया कि अब तो इस चोर के बारे में राजा को खबर देनी चाहिए वरना सब कुछ खत्म हो जायेगा। लोग राजा को परेशान नहीं करना चाहते थे। मगर कोई उपाय नजर नहीं आ रहा था। चोर को पकड़ने में कोई कामयाब नहीं हो पा रहा था।

सब राजा के पास गये।

राजा ने सारी बातें सुनीं। दरबार भरा हुआ था। राजा ने पहले तो अधिकारियों को डांटा कि बात इतनी बढ़ गयी तब क्यों आये? पहले से बताया होता तो बात इतनी न बढ़ती। खैर, अब आगे ऐसा नहीं होना चाहिए।

दरबार में जब सारी बात हो चुकी तब राजा ने कहा, "अब देखना है कि चोर को कौन पकड़ता है।"

दरबार में बीड़ा घुमाया। किसी ने न उठाया।

राजा ने सोचा कि अब तो उसे खुद ही जाना पड़ेगा।

सभा में दुबारा बीड़ा घुमाया गया।

अचल जहां बैठा था, राजा की नजर उस पर गयी। अचल खड़ा हुआ और उसने बीड़ा उठा लिया। राजा ने उसे दुबारा सोच लेने के लिए कहा। मगर अचल अपने निर्णय पर अडिग था।

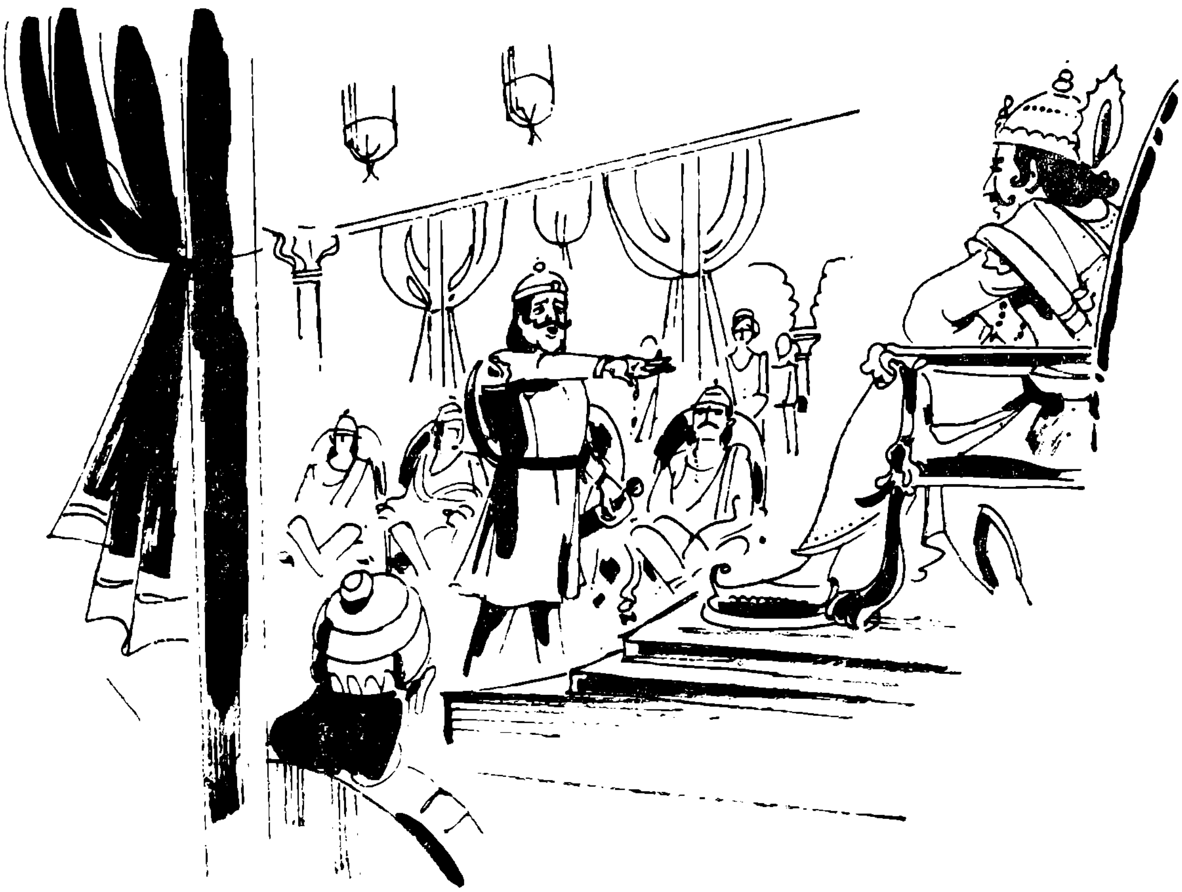
अचल ने कहा, "महाराज, चोर को मैं पकड़ सकता हूं। मगर मुझे पंद्रह दिनों का समय चाहिए।"

राजा ने कहा, "पंद्रह दिन क्या, एक महीने की मोहलत ले सकते हो। मगर मेरी इज्जत जाने न पाये।"

राजा को भरोसा दिलाने के लिए अचल ने फिर से दोहराया, "हुजूर, यदि पंद्रह दिनों में चोर को पकड़कर न लाया, तो मेरा जीना हराम है। मैं जलकर राख हो जाऊंगा। आप धैर्य रखें। मैं चोर को जरूर पकड़कर लाऊंगा।"

राजा खुश हुए और उन्होंने अचल को आशीर्वाद दिया।

अब अचल को चैन कहां! शहर की



गलियां, चौक-बाजार, मंदिर, पुराने टूटे घर, खंडहर सारी जगहों पर वह देख आया। शहर का कोना-कोना छान डाला उसने। जिसने भी जरा-सी भनक दी वहीं जाकर उसने खोज की।

मगर सारी मेहनत बेकार।

अपने खास मित्रों की भी मदद उसने ली। अचल की यह खासियत थी कि सफलता न मिल सके ऐसा काम वह कभी अपने सिर लेता नहीं था, और यदि

ले लिया तो काम पूरा किए बगैर चैन नहीं लेता था। मगर इस काम में सफलता हासिल करने में छक्के छूट जायेंगे, ऐसा अचल को महसूस होने लगा।

समय गुजरने में देर नहीं लगती है। एक, दो, तीन......यूं बारह दिन तो बीत गये।

अचल ने मौत को पास आते देखा। नींद हराम हो गयी। पसीना छूटने लगा उसे। दिल बेचैन हो गया।

अचल को पछतावा होने लगा कि उसने अपने पैरों पर कुल्हाड़ी क्यों मारी? लेकिन किसे कह सकता था? कब्र में जिसके पैर लटक रहे हों, मौत तो ऐसे को भी अच्छी नहीं लगती है, फिर अचल तो हट्टा-कट्टा, ताजादम नौजवान था। उसे मौत से कैसे लगाव हो सकता था?

पंद्रह दिनों की अवधि पूरी होने में कम ही समय बचा था। परेशान अचल मौत के अपशकुनों की कल्पना करने लगा। कोई अपशकुन या अशुभ चिन्ह नजर नहीं आ रहे थे। न कुत्ता रोता था, ना हीं उल्लू दिखायी देता था। उसका दिल बार-बार कहता था– नहीं, अभी उसकी मौत बहुत दूर है।

इन्हीं विचारों में खोया, रात के तीसरे प्रहर में वह दूर, श्मशान में जा पहुंचा।

श्मशान का वातावरण भयानक था। सियार, घुग्घु, रीछ आदि पशुओं की भयंकर आवाजों से श्मशान डरावना हो रहा था। अधजले मुर्दों को गीदड़ नोंच-नोंचकर खा रहे थे। अंधेरे में ऐसा लग रहा था जैसे भूत, प्रेत, चुड़ैल, पिशाच, प्रेतात्माएं इधर-उधर, तरह-तरह की आवाजें करती हुई नाच रही हैं। ऊंचे-ऊंचे पेड़ों जैसे राक्षसों से श्मशान भर गया था।

ऐसे डरावने माहौल में सीधे-साधे आदमी की तो जान ही निकल जाती। मगर अचल हिम्मत के साथ खड़ा था। सारे शहर में उसके भरोसे के आदमी चोर की खोज कर आये थे। एक यह श्मशान ही बाकी रह गया था। उसने

सोचा, यहीं कहीं चोर छिपा हो। उसकी तलाश में वह यहां चला आया था।

श्मशान से कुछ दूर जाने पर उसे एक भयानक आदमी दिखायी दिया। घुंघराले बालों की बहुत बड़ी जटा उसके सर पर थी। फुंफकारनेवाला, भयानक काला सांप उसके कंधे पर लिपटा था। लाल आंखें इधर-उधर नाच-सी रही थीं। एक हाथ में खोपड़ी थी दूसरे में तलवार।

वह चिल्ला रहा था, "मांस, मांस खाऊंगा, मांस चाहिए।"

लग रहा था जैसे कोई पिशाच हो। हां, पिशाच ऐसे ही तो होते होंगे।

अचल ने उसको बहुत बैचेन देखा तो पिशाच से पूछा, "भाई, क्या चाहिए तुझे ? क्या मैं तेरी तकलीफ दूर कर सकता हूं ?"

पिशाच ने भयानक जोर की गर्जना की "मांस चाहिए मुझे। जीते-जागते आदमी का मांस ही खाता हूं मैं।"

अचल के दयालु स्वभाव ने उसकी मांग मंजूर कर ली। उसने अपने शरीर के एक अंग में छुरा भोंककर मांसपेशी निकाली और उसे दे दी। वह खुशी-खुशी खाने लगा।

अधिक मांगा तो अचल ने और भी दिया। बदन से, कई जगहों से मांस के टुकड़े निकालकर देता रहा और पिशाच उसे मजे से खाता गया। पिशाच ने देखा कि अचल में अब ताकत कम होती जा रही थी। सारी देह से खून बह रहा था। उसने और मांगा तो अचल अपना सिर काटने लगा। लेकिन पिशाच ने उसका हाथ पकड़कर उसे रोक लिया।

पिशाच ने कहा, "भाई, बसकर। तू कौन है और यहां किस बात के लिए आया है ?"

अचल बोला, "मेरा नाम अचल है और मैं यहां उस चोर की तलाश में आया हूं, जिसने मेरे सारे सारे शहर में आतंक फैला रखा है। मैंने भरे दरबार में राजा को वचन दिया था कि पंद्रह दिनों के भीतर मैं चोर को पकड़ लाऊंगा और नहीं ला सका तो आत्मदाह कर लूंगा।

"आज तेरह दिन हो गये, शहर का कोना-कोना छान लिया। चोर का

कहीं पता नहीं चला। एक यह जगह बाकी थी। यहां भी वह न मिला।

"अब इस शरीर का क्या फायदा? इसलिए यदि आपकी भूख इस देह से शांत होती है तो वह आपके चरणों में चढ़ाकर मुझे संतोष मिलेगा। मेरा यह सिर बचा है। कृपा कर इसे भी स्वीकार कीजिए।"

अचल ने फिर से सिर काटने को हाथ उठाया कि पिशाच ने उसे रोकते हुए कहा, "अचल, तेरे जैसे परोपकारी को तो जिंदा रहकर लोगों का भला करना चाहिए। मैं तो सिर्फ तेरी परीक्षा कर रहा था। मैं तेरे साहस, दया तथा परोपकार की भावना से बड़ा संतुष्ट हुआ हूं। अचल, मांग, तू जो मांगेगा, मैं वह दूंगा। मैं तुझसे बहुत खुश हूं।"

"देव, आप तो जानते ही हैं। इस वक्त मैं और क्या मांग सकता हूं?"

"वीर, तेरा काम कलतक हो जायेगा। घर जाकर आराम से सो जा। तेरी थकी देह को सुख मिले, और यह पूरी तरह स्वस्थ हो जाये। मेरे आशीर्वाद तेरे साथ हैं।" पिशाच ने कहा।

अचल वापस लौट रहा था कि रास्ते में उसने एक तालाब देखा। वह पानी पीने रुका। उसने जैसे ही पानी में हाथ डाला, उसके देह के घाव ठीक होने लगे। कुछ ही देर में वह एकदम स्वस्थ हो गया। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। अब उसे पिशाच की बातों पर यकीन आने लगा।

घर जाकर वह आराम से सो गया। बहुत दिनों बाद उसे सुख की नींद मिली।

सुबह होने लगी। वह आधी नींद में करवटें बदल रहा था। तभी उसने आवाज सुनी, "अचल, जाग रहा है न?"

अचल ने आधी नींद में ही जवाब दिया, "हां देव, जाग रहा हूं। कहिए, क्या सेवा करूं आपकी?"

अचल को उस पिशाच की आवाज का भ्रम हुआ।

फिर से आवाज आयी, "अचल, सुन, इस शहर की पूरब की दिशा में एक आश्रम है। वहां भगवा वस्त्र पहने एक साधु रहता है। उसका नाम पर्वत है। उसका एक चेला है कपिलाक्ष।

"वही साधु अपने इस चेले को रात



के अंधेरे में, शहर में चोरी करने भेजता है। चोरी का माल वह अपने आश्रम के तहखाने में जमा करता है। दिन में वह बगुला भगत बनकर शहर में घूमता है।"

इतना सुनते ही अचल आवेश में तलवार खींचकर खड़ा हो गया। आंखें मलीं तो देखा कि वह अपने कमरे में सो रहा था। वहां कोई नहीं था। रात में पिशाच के कहे शब्द उसे याद आये। वह उसी समय जल्दी से अपने एक दोस्त को लेकर नगर की पूर्व दिशा में रवाना हुआ। चलते-चलते दोनों आश्रम में पहुंचे।

आश्रम के बाहर एक साधु कथा-वार्ता सुना रहा था। अचल को पिशाच की बातों में अब पूरा भरोसा हो गया। भक्तजन साधु की बात ध्यान से सुन रहे थे। साधु धर्म का अवतार लग रहा था।

ऐसा धर्मात्मा साधु रात को अपने

चेले से चोरी का अधम काम करवाता होगा, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आदमी का बाहरी चेहरा, उसके भीतर कालेपन को कितनी आसानी से छिपा लेता है, साधु इसका प्रमाण था। कहां उसका भोला चेहरा और कहां उसके हृदय का कालापन। !

अचल साधु के पास बैठ गया। साधु ने देखा कि वह बेचैन है। उसने पूछा, " भद्र, कुछ बेचैनी है क्या ? क्या कुछ बुरी बात हो गयी है ?"

अचल ने जवाब दिया, " महाराज, हम जैसे अशुभ लक्षणवालों के भाग्य में अशुभ ही बात घटती है।"

साधु ने अचल को ऊपर से नीचे तक निहारा और कहा, "तेरे सारे शरीर में ऐसे चिन्ह और लक्षण दीख रहे हैं कि तुझे किसी बात का दुःख हो ही नहीं सकता। तेरा यह चेहरा, यह विशाल माथा, बड़े कान, नुकीली नाक, गोल गरदन सारे भाग्यशाली के ही लक्षण हैं। तुझे किसी प्रकार का दुःख है, यह मैं मान ही नहीं सकता हूं।"

अचल ने कहा, "महाराज, जरा मेरा हाथ देखकर यह तो बताइए कि मेरी उम्र कितनी है ?"

साधु ने हाथ देखकर कहा, "भद्र, बड़ी लंबी उम्र है तुम्हारी।"

अचल ने उठकर साधु को नमस्कार किया और घर लौट आया। उसके मन में द्वंद्व चलने लगा। फिर भी राजा के समक्ष ली प्रतिज्ञा की खातिर, मुद्दत पूरी होने को थी, इसलिए वह राजा के पास गया। उसने सारी घटना सिलसिले से कह सुनायी।

राजा ने यह सुनकर सिरदर्द का बहाना बनाया।

सारे शहर में राजा के सिरदर्द की बात फैलते देर न लगी। किसी भी वैद्य-हकीम से सिरदर्द मिटता ही न था। अच्छे-अच्छे मंत्रविद बुलाए गये। कुछ फायदा नहीं। लाभ होता भी कैसे, दर्द तो था ही नहीं।

आखिर उस आश्रमवाले साधु को बुलाया गया। वह इसी प्रतीक्षा में था।



बड़े ठाट-बाट के साथ, आदर-मानसहित वह दरबार में आया। राजा के पास उसे ले जाया गया। राजा के निमंत्रण से या तो भाग्य फूटते हैं या भाग्य खुलते हैं।

उसे देख राजा और जोरों से कराहने लगा। साधु ने राजा की जांच-पड़ताल की। पेट देखा, खाने-पीने के बारे में सवाल किए, आंखें देखीं। सब तो ठीक था। राजा के रोग की जांच में समय बीतता जा रहा था। साधु भरसक कोशिश करता था क्योंकि अन्य वैद्य-हकीम से कोई फायदा नहीं हुआ था। यदि वह राजा को ठीक कर दे तब तो उसके दिन ही फिर जायेंगे। साधु यह सोचे जा रहा था और सरदर्द के लिए दवाइयां बना रहा था। उसे पता न था

कि सचमुच, उसके दिन फिर रहे हैं। उसका अंत निकट था।

उधर राजा की योजना के मुताबिक कुछ सिपाही साधु के आश्रम में जाकर तहखाने में उतरे। अचल की बात सच निकली। तहखाने में सारा चोरी का माल पड़ा था। सिपाहियों के साथ वे लोग भी गये, जिनके घर चोरी हुई थी। उन्होंने अपना-अपना माल-सामान पहचाना।

एक सिपाही ने आकर राजा को इस बात की खबर दी। राजा ने उसी समय साधु को गिरफ्तार कर लिया। साधु भौंचक्का रह गया।

राजा ने ऐसे बेईमान साधु को बहुत बड़ी सजा देने की सोची। उसका सिर मुड़ाया, मुंह काला किया, गधे की सवारी पर शहर भर में घुमाया और अंत में उसको मौत के घाट उतारा। घड़ी भर में सब समाप्त हो गया।

मगर इस घटना से अचल के मन को भारी धक्का लगा। दूसरों का भला करनेवाले अचल से किसी की भी बुराई या कष्ट सहा नहीं जाता था। साधु की भी यह दशा उससे सही नहीं गयी। उसे साधु पर दया तो आ रही थी उसका अंत देखकर अचल को पछतावा होने लगा। वह आज किसी की मौत का कारण बना था। उसे अपने-आप पर ही धिक्कार होने लगा।

इस कलंक को धोने के लिए उसने आग में जलकर भस्म हो जाना ठीक समझा। वह लकड़ियां इकट्ठी करने शहर से बाहर जंगल में गया। वह चिता जलाने जा ही रहा था कि एक तपस्वी को उसने देखा। इस जंगल में इतनी कठोर तपस्या करने का क्या कारण होगा, अचल के मन में सवाल उठा।

वह उस तपस्वी के पास गया और उससे पूछा।

तपस्वी ने जवाब दिया, "भाई, काकंदी नगरी का मैं रहनेवाला हूं। वनसिंह मेरा नाम है। शिकार करना मेरा धंधा था। एक बार राजा के साथ शिकार करने गया। हिरणों को बुलाने के लिए मैंने संगीत छेड़ा। पेड़ के पीछे हम छिप गये थे। जैसे ही हिरण मेरे गीत से आकर्षित होकर आये, राजा ने तीर चलाया और एक हिरणी को बींध दिया।

वह हिरणी गर्भवती थी। उसका गर्भ गिर गया, और वह भी गिरकर मर गयी।

"मरने से पहले हिरणी के करुण रुदन से मेरा दिल कांप उठा। मुझे लगा कि उस गर्भवती हिरणी की मौत का कारण मैं ही हूं। मैं न संगीत छेड़ता, न वह वहां आती, न उसकी मौत होती। मुझे बेहद पछतावा हुआ।

"किसी निर्दोष की जान लेकर जीना भी क्या जीना? मुझे नफरत होने लगी अपने आपसे। प्रायश्चित के लिए अपने आपको मिटा देने के ख्याल से मैं एक पर्वत के ऊपर गया। वहां से गिरकर मर जाना चाहता था। लेकिन भगवान की लीला देखो।

"उसी वक्त ध्यान में बैठे एक मुनि की नजर खुली और मेरी नजर से टकरायी।

"उन्होंने मुझे इशारे से बुलाया और कहा, 'कितने ही उलट-फेरों के बाद यह मानव-देह मिलती है! उसे यूं नष्ट कर देने में क्या मिलेगा? यदि तू मरना ही चाहता है तो तू इस प्रकार मर कि तेरे सारे पाप जलकर खाक हो जायें। व्रत, तप, नियम, जप, उपवास आदि करके मर, जिसने तेरे जन्म-मरण के फेरे टल जायें। मनुष्य देह बार-बार नहीं मिलती है, इसका सदुपयोग कर लेना चाहिए।'

"मुनि के उपदेशों का असर मेरे मन पर हुआ। तभी से कठोर तपस्या के द्वारा आत्मा को पवित्र करने की कोशिश करता हूं।"

अचल ने उस तपस्वी में जो परिवर्तन देखे, उससे उसे भी प्रेरणा मिली। उसने भी अपना जीवन बेकार नष्ट करने का विचार छोड़ दिया।

वह दीक्षा लेकर साधु हो गया। कठोर तप किये, शास्त्रों का अभ्यास किया। भयंकर श्मशानों में जाकर ध्यानलीन हुआ। वह अब अचल मुनि हो गया।

निर्भयपुर के लोग अचल मुनि के दर्शन को जाने लगे।

एक बार अचल मुनि जैन धर्म का

उपदेश कर थे कि एक आदमी ने राजा रामचंद्र के बारे में मुनि से कहा कि जैन धर्म के विरोधी लोगों के कहने में आकर वे जैन धर्म के घोर विरोधी हो गये हैं ।

अचल मुनि निर्भयपुर गये । शहर के बाहर किसी बगीचे में उन्होंने अपना आसान बिछाया और बैठे । उन्हीं दिनों शहर के हाथियों में एक प्रकार का जानलेवा रोग फैल गया था ।

राजा के वैद्यों ने अनेक इलाज किए, देवी-देवताओं के हवन आदि किए गये मगर कोई फायदा न हुआ । हाथी मरते गये । कुछ दिनों में राजा की सारी गजशाला इस प्राणघातक रोग के कारण खाली हो जाती ।

राजा की तो नींद हराम हो गयी ।

इन्हीं दिनों राजा ने अचल मुनि के नगर में आने की बात सुनी । उन्होंने उनके पास जाने की सोची । अचल मुनि के बारे में, उनकी सिद्दियों के बारे में उन्होंने बहुत कुछ सुना था ।

राजा उस बगीचे में गये । अचल मुनि के पैर छुए ।

मुनि ने कहा कि राजा का फर्ज तो यह है कि उसे सब धर्मों के प्रति समान नजर रखनी चाहिए । किसी भी धर्म के लिए पूर्वग्रह नहीं होना चाहिए । किसी भी आदमी या चीज की कीमत उसके गुणों के आधार पर होनी चाहिए ।

राजा ने अचल से कहा, " भगवन, आपका उपदेश सर आंखों पर । अब मैं किसी भी धर्म के प्रति पूर्वग्रह नहीं रखूंगा ।

" भगवन्, आपसे एक सहायता चाहिए । मैं बड़ी मुसीबत में फंसा हूं । मेरी गजशाला के सारे हाथियों में एक प्राणघातक रोग फैल गया है । हर रोज कई हाथियों की मौत होती है । चोर के समय आपकी मदद से हम निश्चिंत हो पाये थे । अब तो आपका ही आसरा है । आप ही कोई रास्ता सुझाइए । आपकी कृपा होगी ।"

अचल मुनि ने राजा से कहा, " राजा, आपके विचार में फर्क देखकर मैं बड़ा खुश हुआ हूं । आप ऐसा कीजिए कि किसी सच्चे जैन साधु के पांव धोकर उस पानी का अपने हाथियों पर छिड़काव कर दें । हाथियों का रोग भाग जायेगा ।"



राजा ने कहा, "मुनिश्री, मैं और किसे खोजने जाऊं? आप तो मेरे सामने मौजूद ही हैं। लाइये, आपके पैर धोकर वह पानी मैं हाथियों पर छिड़कवाता हूं।"

राजा ने उनके पैरों का पानी ले जाकर हाथियों पर डाला, और देखते-देखते सारे हाथी अच्छे हो गये।

राजा के मन में सवाल उठा कि आखिर यह रोग हुआ कैसे ? उन्होंने अचल मुनि से पूछा ।

अचल मुनि बोले, "राजन, आपने उस चोर साधु को मरवा दिया था। अपने कुकर्मों के कारण वह राक्षस बना। आपसे वह बदला लेना चाहता था। मगर आपके पुण्य-प्रताप के कारण वह ऐसा न कर सका। मगर हाथियों में ऐसा रोग फैलाकर उसने आपको दु:खी तो अवश्य ही किया।"

राजा ने अच्छे काम करते हुए अपना जीवन बिताया।

अचल मुनि पुण्य कमाते हुए भगवान को प्यारे हुए। ●

हमारे आगामी प्रकाशन

- सावित्री की कहानी
- संत मूलदास
- हजरत राबिया बसरी
- मीरा
- सच्ची मित्रता
- दैत्य से देव
- गुरू गोविंद सिंह
- कौन जीता ?
- नटखट कृष्ण कन्हैया
- सच की जीत

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जिसे आम जनता आसानी से समझ सके और जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी !

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान और आनन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी तीसरी किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां









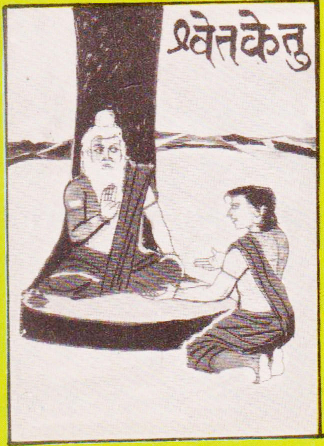
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग
बम्बई–४०० ००२

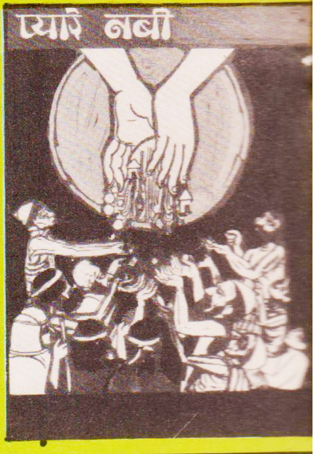












एकमात्र विक्रेता – **एस. चंद एंड कंपनी लि**
पोस्ट बॉक्स नं. ५७३३
राम नगर, नयी दिल्ली – ११००५५